

व्याकृत वि. (तत्.) 1. अलग-अलग किया हुआ, पृथक् किया हुआ 2. व्यक्त किया हुआ, विश्लेषित किया हुआ 3. जिसकी व्याख्या की गई हो 4. रूपांतरित 5. विकृत।

व्याक्रोश पुं. (तत्.) 1. क्रोध 2. नाराजगी 3. गाली, भर्त्सना, क्रोध में चिल्लाना।

व्याख्या स्त्री. (तत्.) 1. किसी कठिन वाक्य, पद, कविता आदि के अर्थ को स्पष्ट करना, बोधगम्य भाषा में समझाना 2. किसी ग्रंथ आदि की टीका 3. किसी वाक्य, पद, पाठ आदि का सहज-बुद्धि से लगाया जाने वाला अर्थ 4. विवेचन, निरूपण, प्रतिपादन।

व्याख्यागम्य वि. (तत्.) 1. व्याख्या से ही समझ में आने वाला, अस्पष्ट 2. जिसकी व्याख्या की जा सके, व्याख्येय समझाने योग्य।

व्याख्याता पुं. (तत्.) 1. व्याख्या करने वाला 2. टीकाकार 3. विवेचक, प्रतिपादक 4. व्याख्यान देने वाला, प्रवक्ता, भाषण या प्रवचन करने वाला।

व्याख्यात्मक वि. (तत्.) 1. व्याख्या संबंधी, व्याख्यापूर्ण, विस्तृत अर्थपूर्ण, अर्थ एवं भावों का स्पष्टीकरण।

व्याख्यान पुं. 1. भाषण, प्रवचन, व्याख्या करने की क्रिया, भाव 2. विवेचन, निरूपण, व्याख्या, टीका।

व्याख्यान पीठ पुं. (तत्.) भाषण देने के लिए बनाया गया मंच, व्याख्यान मंच, प्रवचन देने का स्थान व्यास पीठ।

व्याख्येय वि. (तत्.) व्याख्या किए जाने योग्य, जिसे स्पष्ट किया जा सके।

व्याघात पुं. (तत्.) 1. बाधा, रुकावट, अड़चन 2. असंगति, विरोध 3. आघात, प्रहार, रगड़ने की क्रिया काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें परस्पर विरोधी फल एक ही कारण से उत्पन्न दिखाये जाते हैं भाषा. किसी अन्य भाषा से संपर्क होने के कारण वक्ता की उच्चारण संबंधी गलतियाँ।

व्याघातक/व्याघाती/व्याघातकारी वि. (तत्.) आघात करने वाला, विरोध करने वाला, रुकावट पैदा करने वाला, विघ्नकारी।

व्याघ्र वि. (तत्.) 1. बाघ, चीता 2. (समास युक्त शब्दों के अंत में) प्रमुख, मुख्य, श्रेष्ठ का भाव जैसे- नरव्याघ्र, पुरुष-व्याघ्र 3. लाल रंग का एरंड का पौधा।

व्याघ्रचर्म वि. (तत्.) बाघ की खाल।

व्याघ्रनख वि. (तत्.) 1. बाघ का नाखून 2. प्राचीन समय में युद्ध में उँगलियों में अंगूठी के रूप में पहना जाने वाला लोहे की मुड़ी हुई कीलों से युक्त बाघ के पंजे के नाखूनों के समान एक शस्त्र, एक प्रकार का गंध द्रव्य।

व्याघ्री स्त्री. (तत्.) बाघिन, मादा व्याघ्र, मादा चीता।

व्याज पुं. 1. धोखा, छल, कपट, जालसाजी 2. कला-कौशल 3. बहाना, व्यपदेश, आभास 4. युक्ति, चाल, कूटयुक्ति।

व्याजनिंदा स्त्री. (तत्.) छल या कपट से की गई निंदा काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें किसी की निंदा से अन्य किसी की निंदा का चमत्कारपूर्ण वर्णन किया जाता है (कहना बहू को और सुनाना सास को)।

व्याज वचन वि. (तत्.) वक्रोक्ति, कटु उक्ति, ताना। काव्य. एक शब्दालंकार जिसमें वक्ता के वाक्य का श्लेष या काकु (स्वर बदल कर) द्वारा अन्य व्यक्ति भिन्न अर्थ करता है।

व्याज स्तुति स्त्री. (तत्.) निंदा के बहाने से की जाने वाली प्रशंसा, व्यंग्योक्ति काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें निंदा के बहाने प्रशंसा अथवा प्रशंसा के बहाने निंदा का चमत्कारी वर्णन किया जाता है।

व्याजोक्ति स्त्री. (तत्.) छलपूर्ण कथन, परोक्ष संकेत काव्य. एक अर्थालंकार जिसमें गुप्त रहस्य के प्रकट होने पर उसे किसी कथन या